50th Anniversary of ICRISAT

The International Crops Research Institute for the Semi-Arid Tropics (ICRISAT) was established on 28 March 1972 with the signing of a memorandum between the Government of India and Ford Foundation. ICRISAT aims a prosperous, food-secure and resilient drylands in Asia & Africa and to reduce poverty, hunger, malnutrition and environmental degradation in the drylands.

The drylands cover about 6.5 million sq. km. in over 55 countries with a population of over 2 billion. ICRISAT's geographic focus is on the drylands of Africa and Asia and its mandate is research on crops which specifically grow in the drylands such as millets, sorghum, chickpea, pigeonpea and groundnut. These crops are the most resilient, highly nutritious and climate smart. With the vision of a prosperous, food-secure and resilient dryland tropics ICRISAT works with millions of smallholder farmers across Asia and sub-Saharan Africa. ICRISAT's mission to reduce poverty, hunger, malnutrition and environmental degradation in the drylands is facilitated by its work ranging from high-end genomics and molecular breeding to working directly with farmers introducing new varieties, hybrids and farming technologies. ICRISAT works in a holistic manner across the entire value chain with a special emphasis on women and youth. Gender-sensitive agriculture and nutrition-sensitive agriculture are the foundation of ICRISAT's work. Its work contributes to Sustainable Development Goals SDG1, SDG2, SDG3, SDG5.b and SDG13.1.

ICRISAT's core strength of world-class research ranging from genebank, genomics, gene editing, modern crop breeding, natural resource management, seed systems, and climate-smart agriculture to agribusiness models, digital solutions and policy inputs is at the service of smallholder farmers across the dryland regions of the world.

ICRISAT values its partnership with the Government of India, the Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, the Indian Council of Agricultural Research and its affiliated research institutes, various state agriculture universities, state government agriculture departments and other stakeholders in the Indian agriculture ecosystem. This collaboration has helped benefit smallholder farmers not only in India but also in sub-Saharan Africa as the technologies developed here also benefit farmers in Africa. ICRISAT's work in India is closely aligned to the national priorities and to do so it has leveraged global expertise and partnerships, used leading-edge innovative ideas, concepts and tools and our understanding of the needs on the ground based on our five decades of experience.

ICRISAT works with diverse public, private and international research partnerships across Asia and Africa. This makes a difference in farmers' fields by scaling scientific innovations with due cognizance and support of the policy, market and socio-economic environment. ICRISAT works with national partners to increase crop productivity and incomes of farmers in the drylands while improving the resilience of the lands and livelihoods of resource-poor communities.

The food systems of the drylands have a critical role in feeding the growing world population. Agriculture can be the engine of rural prosperity and a vision for dryland agriculture that can meet both human needs and planetary boundaries is "to transform dryland agriculture from its current subsistence level to a profitable enterprise". The dryland food systems of the future must be sustainable, resilient, inclusive and nutrition-sensitive.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 50 years of International Crops Research Institute for the Semi-Arid Tropics (ICRISAT) and appreciate its efforts to reduce poverty, hunger, malnutrition and environmental degradation in the drylands.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Shri Brahm Prakash
Text	:	Referenced from contents provided by ICRISAT

इक्रिसैट की 50वीं वर्षगांठ

अंतर्राष्ट्रीय अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीआरआईएसएटी) की स्थापना 28 मार्च 1972 को भारत सरकार और फोर्ड फाउंडेशन के बीच एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके की गई थी। आईसीआरआईएसएटी का लक्ष्य है एशिया और अफ्रीका की शुष्क भूमि में समृद्ध, खाद्य–सुरक्षा युक्त तथा अनुकूल परिस्थितियां तैयार करना और इस क्षेत्र में गरीबी, भूख, कुपोषण और पर्यावरणीय हानि को कम करना।

उक्त शुष्क भूमि 55 से भी अधिक देशों में फैली हुई है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 65 लाख वर्ग किमी तथा आबादी 20 लाख से भी अधिक है। आईसीआरआईएसएटी मुख्य रूप से अफ्रीका और एशिया की शुष्क भूमि पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है और वहां उगाई जाने वाली फसलों जैसे बाजरा, ज्वार, चना, अरहर और मूंगफली आदि पर शोध करता है। ये फसलें वहां की जलवायु के लिए अनुकूल, अत्यंत पौष्टिक तथा जलवायु–सक्षम हैं। समृद्ध, खाद्य–सुरक्षा से युक्त और उष्णकटिबंधीय जलवायु के अनुकूल शुष्क भूमि विकसित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर आईसीआरआईएसएटी, एशिया और उप–सहारा अफ्रीका में लाखों छोटे किसानों के साथ कार्य कर रहा है। आईसीआरआईएसएटी का मिशन है– इस शुष्क भूमि से गरीबी, भूख, कुपोषण और पर्यावरणीय क्षरण कम करना। इसके लिए उच्चव–स्त्रीय जीनोम विज्ञान और आणविक प्रजनन से लेकर सीधे किसानों के साथ मिलकर काम करके उन्हें फसलों की नई किस्में, संकर प्रजातियां और कृषि प्रौद्योगिकियां उपलब्ध् कराई जा रहीं हैं। आईसीआरआईएसएटी संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में समग्र रूप से कार्य करता है जिसमें महिलाओं और युवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। महिला उन्मुख कृषि और पोषण–उन्मुख कृषि आईसीआरआईएसएटी के कार्यों के मूल उद्देश्य हैं। इसका कार्य सतत विकास के लक्ष्यों एसडीजी1, एसडीजी2, एसडीजी3, एसडीजी5.बी और एसडीजी13.1 में अपना योगदान देता है।

विश्व के शुष्क क्षेत्रों में जीनबैंक, जीनोम विज्ञान, जीन संशोधन, आधुनिक फसल प्रजनन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, बीज प्रणाली और जलवायु–सक्षम कृषि पर विश्व स्तरीय अनुसंधान से लेकर छोटे जोतधारक किसानों के लिए कृषि व्यवसाय मॉडल, डिजिटल समाधान और नीति निर्माण तक आईसीआरआईएसएटी के मुख्य कार्य हैं।

आईसीआरआईएसएटी की महत्वपूर्ण साझेदारी भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और इसके संबद्ध अनुसंधान संस्थानों, विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, राज्य सरकार के कृषि विभागों और देशभर के कृषि क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य हितधारकों के साथ है। इस साझेदारी से केवल भारत के ही नहीं, बल्कि उप–सहारा अफ्रीका के छोटे किसान भी लाभान्वित होते हैं, क्योंकि यहां तैयार की गई तकनीकों से अफ्रीका के किसानों को भी लाभ होता है। भारत में आईसीआरआईएसएटी का कार्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं से सीधे–सीधे जुड़ा हुआ है और इसलिए यह संस्थाकन वैश्विक विशेषज्ञता और साझेदारी, अग्रणी–नवाचार वाले विचारों, अवधारणाओं और उपकरणों का उपयोग करता है, जो हमारे पांच दशकों के अनुभव के आधार पर विकसित जमीनी जरूरतों की समझ के आधार पर तैयार किए जाते हैं।

आईसीआरआईएसएटी पूरे एशिया और अफ्रीका में विभिन्न सरकारी, निजी एवं अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान साझेदारों के साथ मिलकर कार्य करता है। नीति, बाजार और सामाजिक–आर्थिक वातावरण के सहयोग तथा उचित ज्ञान का उपयोग करके वैज्ञानिक नवाचारों को बढ़ावा देकर किसानों के खेतों में सुधार लाया जाता है। आईसीआरआईएसएटी राष्ट्रीय साझेदारों के साथ मिलकर शुष्क भूमि पर फसल उत्पादन तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए कार्य करता है, साथ ही भूमि की अनुकूलता में सुधार और कम संसाधनों वाले समुदायों के जीवन स्तर में सुधार लाता है।

शुष्क भूमि का खाद्य–तंत्र की दुनिया भर की बढ़ती हुई आबादी का पेट भरने में महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि, ग्रामीण समृद्धि का वाहक तथा शुष्क भूमि पर कृषि के लिए एक विजन "शुष्क भूमि पर कृषि को वर्तमान निर्वाह स्तर से ऊपर उठाकर एक लाभदायक उद्यम में बदलना" बन सकता है, जो मनुष्य की आवश्यकताओं तथा जमीन की कमी को पूरा करे। भविष्य का शुष्क भूमि खाद्य–तंत्र टिकाऊ, अनुकूल, समावेशी और पोषण के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

डाक विभाग, अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंधीय अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीआरआईएसएटी) के 50 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है तथा शुष्क भूमि में गरीबी, भूख, कुपोषण और पर्यावरणीय क्षरण को कम करने के इसके प्रयासों की सराहना करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री ब्रह्म प्रकाश

पाठ : आईसीआरआईएसएटी द्वारा उपलब्ध् कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	309500
Stamps Printed	:	309500
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00